बाबा ने बनाया आयुष्वान

✻ ब्रह्माकुमारी पूनम, जीवन पार्क, नई दिल्ली

बारह सितंबर, 2012 की रात मैंने सपना देखा कि मुझे कैंसर जैसी भयानक बीमारी है। सुबह अपने युगल श्री राकेश चौहान को उस सपने के बारे में बताया। जाँच के लिए उसी दिन वे मुझे डॉक्टर के पास ले गये। चौदह सितंबर, 2012 को रिपार्ट आ गयी और कैंसर की पुष्टि हो गई।

साँई बाबा बदल कर बन गए ब्रह्मा बाबा

परिवार का हर सदस्य रो रहा था। मैंने बाबा से कहा, बाबा, मुझे हिम्मत दो ताकि मैं अपने दोनों बच्चों को सम्भाल सकूं। मुझे उनके भविष्य की चिन्ता सता रही थी। उस समय बड़ा बेटा दसवीं में और छोटा बेटा छठी कक्षा में पढ़ रहा था। चौदह सितम्बर की रात मैंने कुछ बाबा की याद में और कुछ सदमे के साये में काटी। सतरह सितम्बर ऑपरेशन की तारीख तय कर दी गई। निश्चित दिन मुझे ऑपरेशन थियेटर ले जाया गया। मन में डर नहीं था, निर्भीक होकर बाबा का नाम लेकर जा रही थी। आँखें बंद की तो साँई बाबा के दर्शन हुए। साँई बाबा कुछ क्षण पश्चात् ब्रह्मा बाबा में बदल गये। बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा और मेरे साथ-साथ ऑपरेशन थियेटर में चल दिये। बाबा का साथ पाकर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि अभी जीवन की सांसें बाकी हैं।

बाबा गिनती के साथ फूल देते गए

डॉक्टर और उनकी टीम ऑपरेशन के लिए तैयार थी। मैंने देखा, मेरे ब्रह्मा बाबा, मेरी आँखों के सामने डॉक्टर के लौकिक शरीर में प्रवेश कर गये। बाबा ने मेरा सफल ऑपरेशन अपने हाथों से किया। ऑपरेशन 8 घंटे चला। होश आया तो मैं दर्द से तड़प रही थी। चारों तरफ नलियों से घिरी हुई थी। दर्द के बीच बाबा को याद कर रही थी। अठारह तारीख की रात मैंने एक करिश्मा देखा। सफेद मोतिया के फूलों का सिंहासन मेरे नजदीक आ रहा था। दूर से आकृति पहचान न पायी। सिंहासन नज़दीक आया तो देखा, मेरे प्यारे बाबा मेरे समीप आ रहे हैं। बाबा ने बड़े प्यार से मेरे हाथ आगे कराये। मैंने हाथ खोल कर बाबा के सामने कर दिये। बाबा ने मुझे गिनती बोलने को कहा। मैं गिनती बोलती गयी और बाबा मुझे गिनती के साथ-

साथ फूल देते गये। तीस तक गिनती गिनने के बाद बाबा ने मुझे आगे न बोलने को कहा। बाबा ने मुझे कहा, प्यारी बच्ची, मैंने तीस साल तुम्हारी आयु में जोड़ दिये हैं। ऐसा कह बाबा अपने वतन चल दिए।

कमरे में भीनी खुशबू महक रही थी। मेरी आँखें बाबा को और अधिक निहारने के लिए उत्सुक थीं। मैं बाबा की शुक्रगुजार हूँ, बाबा ने मेरा इतना साथ दिया कि शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। बाबा मेरे हैं, मैं बाबा की हूँ। मैं हमेशा के लिए अपने बाबा की हो चुकी हूँ। मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। बाबा ने युगल को साथ देने के लिए प्रेरित किया, वे भी पूर्ण रूप से मेरा साथ दे रहे हैं। ❖

क्षमाभाव के साथ दी गई शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है